International Journal of Arts & Education Research

आचार्य रजनीश के दार्शनिक एवं शैक्षिक विचारों की आधुनिक भारतीय परिप्रेक्ष्य में उपादेयता

संजीव कुमार*[1], राजेश कुमार[2]

[1]रिसर्च स्कॉलर, साई नाथ विश्वविद्यालय रांची, झारखंड ।

प्रस्तावनाः

आचार्य रजनीश (1931-1990) अपने समय के क्रान्तिकारी विचारकों में से थे। जीवन को उनकी समग्रता में जानने, जीने और प्रयोग करने के वे जीवन्त प्रतीक थे। जो पूर्व के अध्यात्म एवं पश्चिम के विज्ञान के समन्वय में विश्वास रखते थे। आचार्य रजनीश अद्वितीय शक्तिशली है एवं मुख्य रूप से उनका क्षेत्र, धर्म दर्शन और आध्यात्म है। आचार्य रजनीश के विचार रजनीश फाउंडेशन द्वारा प्रकाशित लगभग 700 पुस्तकों तथा 5000 ध्वनिमुद्रित प्रवचनों के रूप में उपलब्ध हैं। प्रत्येक शिक्षा दार्शनिक का शिक्षा दर्शन उसके सामान्य दर्शन पर आधारित होता है। शिक्षा कला शिक्षा दर्शन के लक्ष्य को कार्यरूप में परिणित करने का माध्यम है। आज का युग संकट की घड़ी से गुजर रहा है। मानव सभ्यता के इतिहास में आज एक ऐसा दौराहा सामने हैं, जहाँ एक ओर पर्यावरण-प्रदूषण, जनाधिक्य तथा एटमी युद्ध से किसी भी क्षण समस्त मानवता का विनाश हो सकता है तो दूसरी और वैज्ञानिक नवाचारों, तकनीकी उपलब्धियों और संचार क्रान्ति ने एक नयी विश्व-व्यवस्था एवं मानव के स्वर्णिम भविष्य की विपुल सम्भावनाएं प्रस्तुत कर दी है।

शिक्षा का जो वर्तमान स्वरूप आज हमारे सामने है। उसका इतिहास बहुत पुराना है। शताब्दियों से अनेक महापुरूषों ने अपने विचार एवं औतियों द्वारा इनमें अपना योगदान दिया है। शिक्षा की अवधारणा, शिक्षा के उद्देश्य, शिक्षा प्रणाली में शिक्षक एवं शिक्षालय का महत्व, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि आदि शिक्षा शास्त्र के अनेक पक्ष हैं जिनमें समय-समय पर परिवर्तन होते रहे हैं परन्तु उन परिवर्तनों के मूल स्रोत विभिन्न शिक्षा दार्शनिकों के विचार ही हैं।

बीसवीं सदी की इस अवसान बेला में समस्त मानव-जाति के सम्मुख संक्रान्ति काल का यह संकट महान चुनौती और बुद्धिमत्तापूर्ण विकल्प के चयन का अवसर प्रदान करता है।

रजनीश, जो अपने शिष्यों के मध्य आचार्य श्री रजनीश, अथवा भगवान श्री रजनीश अथवा भगवान अथवा ओशो के नाम से जाने जाते थे, को इस संकट का पूरा अहसास था, उन्होंनें अपनी पुस्तक ''एक महान चुनौती मनुष्य का स्वर्णिम भविष्य'' (1988) में लिखा है- ''इसकी पूरी सम्भावना है कि जहां तक जीवन का सम्बन्ध है, कोई भविष्य नहीं होगा। हम ऐसे रास्ते के करीब आ रहे हैं जिसके अन्त में एक बंद गली है। इस तथ्य को स्वीकार करना दुःखद है, लेकिन अच्छा होगा कि हम इसे स्वीकार करें, क्योंकि तब फिर एक नया मोड़ लेने की सम्भावना बनती है। आज घटनाएं जिस दिशा में गतिमान है, उनकी तार्किक निष्पति एक ही है, सार्वभौमिक आत्मघात।'' उन्होंने इस सम्बन्ध में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा प्रकाशित वातावरण और विकास पर विश्व आयोग की एक रिपोर्ट ''हमारा सामूहिक भविष्य'' - का भी उल्लेख किया है। श्री रजनीश

यद्यपि इस रिपोर्ट के द्वारा की गई विश्व की समस्याओं के विश्लेषण और प्रस्तावित समाधानों से पूर्णतः असहमति नहीं रखते तथापि वे इसकी इस अपील की यथार्थता को स्वीकार करते हैं कि इस ग्रह को बचाने के लिए एक अविछिन्न विकास की जरूरत है, अर्थात् भविष्य के साधनों को नष्ट किए बगैर वर्तमान की बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करना और यह कि अगर कुछ करना है तो अभी, इसी समय करना है, अन्यथा भविष्य होगा ही नहीं।

वास्तव में विज्ञान और तकनीकी ने अति द्रुत गति से प्रगति की है। मानव जीवन को विज्ञान ने अति सुविधाजनक और सुरक्षित बना दिया है। भौगोलिक दूरियां कम हो गई हैं, यातायात, संचार तथा चिकित्सा के क्षेत्र में विज्ञान की उपलब्धियां आशातीत हैं, परन्तु दूसरी ओर विज्ञान से सुसज्जित मानव समाज ने समृद्धि की तलाश में पर्यावरण-प्रदूषण द्वारा स्वयं को खतरे में डाल लिया है और विनाश के नये-नये अस्त्रों का भण्डार संग्रहित कर लिया है। मानव समाजों के बीच दूरियां बढ़ती रही हैं।

आचार्य रजनीश मनुष्य का जीवन, उसका लक्ष्य और आनन्द और शांति प्राप्त करने के तरीके पर मनन करने वाले आध्यात्मिक महा-पुरूषों के श्रेणी में आधुनिकतम थे, जो भारत के आध्यात्म और पश्चिम के विज्ञान के स्वस्थ समन्वय द्वारा एक नये मानव और नये समाज की रचना करना चाहते थे। वे ''वसुद्यैव कुटुम्बकम्'' को मूर्त रूप प्रदान कर एक विश्व की स्थापना करना चाहते थे, एक ऐसा विश्व जो शोषण-रहित हो और जहां मानव मन की समस्त सम्भावनाएं फलीफूत हो सके।

आचार्य रजनीश एक ऐसे आध्यात्मिक चिन्तक थे जिन्होंने केवल उपदेश ही नहीं दिये, बल्कि ध्यान और योग की आध्यात्म विद्या भी सिखाई। उस विद्या के प्रसार के लिए एक मिशन की स्थापना ही नहीं की, वरन् अपने विचारों की अभिभूति द्वारा नये समाज की रचना हेतु प्रयोग व प्रयास भी किये। यह स्वाभाविक था, कि ऐसा चिन्तक अदम्य साहसी होता है, और समाज के स्थापित खोखले मूल्यों और आदर्शों के खिलाफ क्रान्ति का शंखनाद करने वाला होता है। सम्भवतः यही कारण है कि वे एक ऐसे आध्यात्मिक सामाजिक चिंतक रहे जो सर्वाधिक विवादास्पद रहे। केवल अनेक भारतीय विद्वानों और पत्रकारों ने उसकी कड़ी आलोचना की, वरन् विदेशी विद्वानों, समाज वैज्ञानिकों और अनेकों राज्य प्रमुखों और उनकी सरकारों ने उनका सक्रिय विरोध किया।

ऐसी परस्पर विरोधी विचारधारों में सत्य क्या है? यह प्रश्न सहज जिज्ञासा और खोज की प्रेरणा देता है। प्रस्तावित शोध विषय के जनक की भी यही जिज्ञासा है।

आज न केवल हमारा देश, वरन् सम्पूर्ण विश्व ही मूल्यों के एक संक्रमण काल से गुजर रहा है। हमारी पुरानी मान्यताऐं आधुनिक परिस्थितियों के संदर्भ में तेजी से बिखर रही है एवं बदलती हुई परिस्थितियों के अनुरूप हम नवीन मूल्यों के निर्माण में सर्वथा असफल है। जिसका कारण है, ऐसी प्रयोजनवादी शिक्षा का अभव, जो कि शिक्षा को गतिशील बना सकें। आचार्य रजनीश का शिक्षा दर्शन हमें यह आधार प्रदान कर सकता है।

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

शोध साहित्य का पुनरावलोकनः

एच0 शंकर (1991) ''महर्षि अरविन्द एवं रूसो के दार्शनिक एवं शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन'', प्रस्तुत शोध का उद्देश्य महर्षि अरविन्द एवं रूसो के दार्शनिक व शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन करना है। यह शोध प्रबन्ध इन शिक्षाविदों से सम्बन्धित साहित्य के विश्लेषण पर आधारित है। महर्षि अरविन्द के अनुसार बालक की प्रच्छन्न शक्ति को बाहर निकालना ही शिक्षा है। ''स्व'' सार्वभौम तथा राष्ट्र में एकता स्थापित करना शिक्षा का कार्य है। इनकी शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को सम्पूर्णता प्रदान करना तथा दैवीय प्राणी तैयार करना है। ये शिक्षक व शिष्यों के मध्य गहरे व्यक्तिगत सम्बन्धों को स्वीकार करते हैं। इनके अनुसार बुद्धि के सर्वतोमुखी विकास के लिए धार्मिक व नैतिक शिक्षा आवश्यक है। रूसो ने सर्वप्रथम प्रऔतिवाद का विचार रखा तथा बालक का महत्व बताते हुए बाल केन्द्रित शिक्षा पर बल दिया और शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार पर सुनियोजित पाठ्यक्रम को अपनाया।

कु0 भारती गुप्ता, (2001) ने रूसो एवं रविन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन के अन्तर्गत इस तथ्य को सम्बल दिया है कि शिक्षा व्यवस्था राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय आदर्शवादी एवं व्यवहारिक सभी दृष्टिकोणों से प्रभावशाली है। उन्होंने एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था का प्रारूप प्रस्तुत किया जिसमें देश की आर्थिक, सामाजिक, नैतिक व आध्यात्मिक अनुकूलता को साथ लेकर शिक्षा के क्षेत्र में नवीन मान्यताओं को प्रतिपादित किया जा सकता है। मेरा भी यह मानना है कि शिक्षा के द्वारा ही देश का आर्थिक, सामाजिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक उत्थान किया जा सकता हैं।

संजीव कुमार, (2003) ने पाश्चात्य दार्शनिक रूसो के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन किया है। इन्होंने प्रऔतिवादी दृष्टिकोण अपनाया है। इनके अनुसार प्रऔति न केवल इन्द्रीय प्रशिक्षण एवं मानसिक शक्तियों का विकास करती है बल्कि बालक को अनुशासित भी करती है। इस सम्बन्ध में रविन्द्रनाथ टैगोर और रूसो ने विभिन्न रीतियों के द्वारा अनेक सिद्धान्तों को प्रतिपादित किया है। यही मेरे प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध का मुख्य केन्द्र बिन्दु है। इसके आधार पर मेरा मानना है कि व्यक्ति को प्रऔति के नियमों के द्वारा शिक्षित किया जा सकता है और स्वाभाविक एवं यथार्थ पूर्ण भी है।

मलिक, पूजा (2007) ''शंकर दयाल शर्मा (भूतपूर्व राष्ट्रपति) के शैक्षिक विचारों का वर्तमान शिक्षा में उपादेयता का अध्ययन'', पूजा मलिक ने अपने शोध विषय डॉ0 शंकर दयाल शर्मा के शैक्षिक विचारों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि उनकी यह मान्यता थी कि शिक्षा व्यक्ति को संकीर्णताओं से मुक्त करती है। देश में चल रहे साक्षरता अभियान को बढ़ावा देने के लिए उन्होंने प्रयास किया। डॉ0 शर्मा का मानना था कि शिक्षा के द्वारा ही विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, चारित्रिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास करना शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए। शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों के व्यक्तित्व और मस्तिष्क को व्यापक बनाकर उनमें नैतिक मूल्यों का संचार करना भी होना चाहिए।

आध्यात्मिक और नैतिक विकास से ही विद्यार्थियों में परस्पर समन्वय, समझ और सद्भाव का गुण आता है।

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

अतः शैक्षिक ज्ञान में नैतिकता और मानवता पर आधारित जीवन-मूल्यों को शामिल करना चाहिए। गुरू शिष्य के बीच निकटता व भावात्मक सम्बन्ध होना चाहिए। शिक्षक अपने आचरण से आदर्श स्थापित करें तथा छात्र उनका अनुसरण करें।

प्रस्तुत अध्ययन (आचार्य रजनीश महान प्रतिभाशाली भारतीय मनीषी के शैक्षिक विचारों का शिक्षा जगत में किस प्रकार प्रयोग हो).... इस दिशा में एक छोटा सा प्रयास है तथा आशा है कि यह उनके विचारों के विषयक अध्ययन का मार्ग खोलेगा जो निःसनदेह शिक्षकों, शिक्षाशास्त्रियों एवं योजनाविदों के लिए लाभकारी एवं मार्गदर्शक होगा। शोध शैक्षिक दर्शन की दृष्टि से सार्थक योगदान कर सकेगा।

शैक्षिक दर्शन की दृष्टि से यह अध्ययन आचार्य रजनीश के शैक्षिक विचारों और आदर्शों को, जो उनके लगभग 700 ग्रन्थों में इधर-उधर बिखरे हैं, उनके शैक्षिक दर्शन के रूप में समन्वित और व्यवस्थित कर सकेगा। निःसन्देह आचार्य रजनीश का शैक्षिक चिंतन संक्रान्ति युग और संकटकालीन युग का दर्शन है। अतः वह भारत और विश्व दोनों की दृष्टि से ही इस संकट की प्रऔति को समझने में सहायक हो सकेगा। मानव समाज 21वीं सदी के प्रवेश द्वार तक पहुँच रहा है, भावी समाज मानव की सभी ऊर्जाओं को समन्वित कर मानव सभ्यता की नयी दिशा प्रदान कर सकेगा या नहीं, यह एक प्रमुख प्रश्न है, यह आशा की जाती है कि आचार्य रजनीश जैसे महान चिंतक के शैक्षिक विचार और आदर्श उस नए समाज की रचना के लिए आवश्यक दिशा-बोध कराने में सक्षम होंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- ओशो, चेति सके तो चेति, नई दिल्ली : डायमंड पाकेट बुक्स प्रा0लि0, 1992
- ओशो, धर्म और राजनीति, दिल्ली, डायमंड पाकेट बुक्स प्रा0लि0, 1991
- ओशो, नये समाज की खोज, दिल्ली, डायमंड पाकेट बुक्स प्रा0लि0, 1992
- ओशो, मुक्त गगन के पंछी, दिल्ली, डायमंड पाकेट बुक्स प्रा0लि0, 1991
- ओशो, मैं मृत्यु सिखाता हूँ, दिल्ली, डायमंड पाकेट बुक्स प्रा0लि0, 1992
- ओशो, शिक्षा और जागरण, दिल्ली, डायमंड पाकेट बुक्स प्रा0लि0, 1991
- ओशो, शिक्षा और विद्रोह, दिल्ली, डायमंड पाकेट बुक्स प्रा0लि0, 1991
- ओशो, शिक्षा नये प्रयोग, दिल्ली, डायमंड पाकेट बुक्स प्रा0लि0, 1991
- ओशो, शिक्षा और क्रान्ति, दिल्ली, डायमंड पाकेट बुक्स प्रा0लि0, 1991
- ओशो, सांच सांच सो सांच, पूना, रेबल पब्लिशिंग हाऊस, 1994
- ओशो, संभोग से समाधि की ओरः जीवन-ऊर्जा के रूपान्तरण का विज्ञान, पूना, रेबल पब्लिशिंग हाऊस, 1993

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.